IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

"दीनदयाल उपाध्याय एवं परम पावन दलाई लामा जी के विचारों की विवेचना : तिब्बत के स्वतंत्रता संघर्ष एवं चीन की प्रवृत्ति के विशेष संदर्भ में"

प्रो. नारायण सिंह राव
आचार्य (सेवानिवृत्त), इतिहास विभाग
डॉ. उदय भान सिंह
सह आचार्य एवं, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र
कुलदीप सिंह
शोधार्थी, तिब्बत अध्ययन केंद्र,
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

शोध सार

प्रस्तुत शोध-पत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय तथा परम पावन दलाई लामा के विचारों का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन तिब्बत के स्वतंत्रता संघर्ष तथा चीन की विस्तारवादी प्रवृत्ति के विशेष संदर्भ में किया गया है। तिब्बत का प्रश्न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का विषय नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक अस्मिता, धार्मिक स्वतंत्रता, मानवाधिकार तथा वैश्विक नैतिकता से भी जुड़ा हुआ प्रश्न है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद, स्वत्व एवं मानवीय मूल्यों पर आधारित एकात्म मानव दर्शन की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के समन्वित विकास पर बल दिया गया। दूसरी ओर, दलाई लामा ने करुणा, अहिंसा, मध्यम मार्ग तथा विश्व शांति के सिद्धांतों के माध्यम से तिब्बती संघर्ष को वैश्विक विमर्श का विषय बनाया।

यह अध्ययन इस तथ्य की विवेचना करता है कि चीन की साम्यवादी एवं विस्तारवादी नीतियाँ किस प्रकार तिब्बत की सांस्कृतिक पहचान तथा धार्मिक स्वतंत्रता के लिए चुनौती बनी हुई हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि दीनदयाल उपाध्याय के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद तथा दलाई लामा के आध्यात्मिक मानवतावाद में अनेक वैचारिक समानताएँ विद्यमान हैं, जो मानवता, नैतिकता एवं सांस्कृतिक संरक्षण पर आधारित हैं। शोध में ऐतिहासिक, तुलनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। यह शोध भारत-तिब्बत संबंधों, चीन की नीतियों तथा एशियाई भू-राजनीति को समझने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा।

मुख्य शब्द : एकात्म मानव दर्शन,तिब्बत स्वतंत्रता संघर्ष,दलाई लामा,दीनदयाल उपाध्याय,चीन की विस्तारवादी नीति,सांस्कृतिक राष्ट्रवाद,अहिंसा एवं मानवाधिकार,भारत-तिब्बत संबंध

प्रस्तावना

तिब्बत का प्रश्न आधुनिक विश्व राजनीति, मानवाधिकार, सांस्कृतिक अस्मिता तथा एशियाई भू-राजनीति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। ऐतिहासिक रूप से तिब्बत एक स्वतंत्र सांस्कृतिक एवं धार्मिक इकाई रहा है, जिसकी विशिष्ट पहचान बौद्ध धर्म, आध्यात्मिक परंपराओं तथा शांतिप्रिय जीवन शैली से निर्मित हुई। किंतु 1950 में चीन द्वारा तिब्बत पर अधिकार स्थापित किए जाने के पश्चात तिब्बती समाज, संस्कृति एवं धर्म पर निरंतर संकट उत्पन्न हुआ। चीन की साम्यवादी शासन व्यवस्था ने तिब्बत की सांस्कृतिक पहचान को नियंत्रित करने तथा उसे चीनी मुख्यधारा में समाहित करने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप तिब्बती जनता के भीतर स्वतंत्रता, सांस्कृतिक संरक्षण एवं धार्मिक स्वायत्तता की चेतना और अधिक प्रबल हुई।

तिब्बत के इसी संघर्ष को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में परम पावन दलाई लामा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। उन्होंने हिंसा के स्थान पर अहिंसा, करुणा तथा संवाद को संघर्ष का आधार बनाया। दलाई लामा का "मध्यम मार्ग"

सिद्धांत चीन और तिब्बत के मध्य शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में एक महत्वपूर्ण वैचारिक पहल माना जाता है। उन्होंने विश्व समुदाय के समक्ष यह स्थापित किया कि तिब्बत का संघर्ष केवल राजनीतिक अधिकार का प्रश्न नहीं, बल्कि मानवता, धार्मिक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक अस्तित्व का प्रश्न है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में तिब्बत का महत्व केवल पड़ोसी क्षेत्र होने तक सीमित नहीं है। भारत और तिब्बत के संबंध प्राचीन सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक आदान-प्रदान पर आधारित रहे हैं। भारतीय बौद्ध धर्म ने तिब्बती संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया तथा तिब्बत ने भारतीय ज्ञान परंपरा को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यही कारण है कि भारत में तिब्बत का प्रश्न केवल अंतरराष्ट्रीय राजनीति का विषय नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत संबंधों से जुड़ा विषय भी है।

इसी संदर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। दीनदयाल उपाध्याय ने "एकात्म मानव दर्शन " के माध्यम से भारतीय संस्कृति आधारित विकास मॉडल प्रस्तुत किया। उनके अनुसार राष्ट्र केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना का जीवंत स्वरूप होता है। उन्होंने पश्चिमी भौतिकवाद एवं साम्यवाद की आलोचना करते हुए भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित व्यवस्था का समर्थन किया। उनके विचारों में सांस्कृतिक स्वाधीनता, राष्ट्रीय अस्मिता एवं मानव-केंद्रित विकास को विशेष महत्व प्राप्त है।

चीन की साम्यवादी एवं विस्तारवादी नीतियों के संदर्भ में दीनदयाल उपाध्याय ने साम्यवाद की वैचारिक सीमाओं की ओर संकेत किया था। उनका मानना था कि साम्यवाद व्यक्ति की आध्यात्मिक स्वतंत्रता एवं सांस्कृतिक विविधता के लिए चुनौती उत्पन्न करता है। तिब्बत की स्थिति इस दृष्टि से उनके विचारों की प्रासंगिकता को प्रमाणित करती है। दूसरी ओर, दलाई लामा का आध्यात्मिक मानवतावाद भी व्यक्ति की आंतरिक स्वतंत्रता, करुणा एवं सांस्कृतिक संरक्षण पर बल देता है।

इस प्रकार दोनों विचारकों के चिंतन में मानवता एवं नैतिक मूल्यों का साझा आधार दिखाई देता है।वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में चीन की बढ़ती आक्रामकता, सीमा विवाद, सांस्कृतिक नियंत्रण एवं भू-राजनीतिक विस्तारवाद ने तिब्बत के प्रश्न को पुनः प्रासंगिक बना दिया है। भारत-चीन संबंधों के संदर्भ में भी तिब्बत एक महत्वपूर्ण कारक है। चीन की नीतियाँ न केवल तिब्बत की सांस्कृतिक पहचान के लिए चुनौती हैं, बल्कि सम्पूर्ण एशियाई संतुलन को प्रभावित करती हैं।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य दीनदयाल उपाध्याय एवं दलाई लामा के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट करना है कि दोनों चिंतकों के विचार किस प्रकार तिब्बत के स्वतंत्रता संघर्ष, सांस्कृतिक संरक्षण एवं मानवता के प्रश्नों से संबंधित हैं। यह अध्ययन चीन की नीतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए भारत-तिब्बत संबंधों के सांस्कृतिक एवं वैचारिक आयामों को भी उजागर करता है । साथ ही यह शोध आधुनिक विश्व में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आध्यात्मिक मानवतावाद तथा मानवाधिकार आधारित विमर्श की प्रासंगिकता को स्थापित करने का प्रयास करता है

साहित्य समीक्षा

तिब्बत के स्वतंत्रता संघर्ष, चीन की नीतियों तथा दीनदयाल उपाध्याय एवं दलाई लामा के विचारों पर विभिन्न विद्वानों द्वारा व्यापक अध्ययन किया गया है। तिब्बत संबंधी साहित्य मुख्यतः ऐतिहासिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं मानवाधिकार संबंधी विमर्शों पर आधारित है। वहीं दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन पर भारतीय राष्ट्रवाद, एकात्म मानववाद एवं सांस्कृतिक दर्शन के संदर्भ में शोध कार्य उपलब्ध हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित "एकात्म मानव दर्शन " भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार है। उनके व्याख्यानों एवं लेखों में पश्चिमी पूंजीवाद एवं साम्यवाद दोनों की आलोचना की गई है। दत्तोपंत

ठेंगड़ी, महेश चंद्र शर्मा तथा विनय सहस्रबुद्धे जैसे विद्वानों ने दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन को भारतीय जीवन दृष्टि एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संदर्भ में व्याख्यायित किया है। इन अध्ययनों में यह स्पष्ट किया गया है कि उपाध्याय व्यक्ति एवं समाज के समन्वित विकास के पक्षधर थे तथा सांस्कृतिक स्वतंत्रता को राष्ट्र की आत्मा मानते थे।

तिब्बत एवं चीन संबंधी साहित्य में Seven Years in Tibet, Freedom in Exile तथा The Struggle for Modern Tibet जैसी कृतियाँ महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। इन ग्रंथों में तिब्बत के ऐतिहासिक विकास, चीनी हस्तक्षेप तथा तिब्बती समाज की समस्याओं का विस्तृत वर्णन मिलता है। मेल्विन गोल्डस्टीन ने तिब्बत-चीन संबंधों को राजनीतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विश्लेषित किया है, जबकि दलाई लामा की आत्मकथा तिब्बती संघर्ष के मानवीय एवं आध्यात्मिक पक्ष को सामने लाती है।

दलाई लामा के विचारों पर आधारित साहित्य में करुणा, अहिंसा, विश्व शांति तथा मध्यम मार्ग नीति को प्रमुखता दी गई है। थॉमस लैयर्ड, रॉबर्ट थरमन तथा समदोंग रिनपोछे जैसे विद्वानों ने दलाई लामा के चिंतन को वैश्विक नैतिकता एवं बौद्ध दर्शन के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। इन अध्ययनों में यह प्रतिपादित किया गया है कि दलाई लामा ने तिब्बती संघर्ष को हिंसात्मक आंदोलन के स्थान पर नैतिक एवं आध्यात्मिक आंदोलन के रूप में स्थापित किया।

चीन की विस्तारवादी नीति पर भी अनेक विद्वानों ने अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। जॉन गार्वर, ब्रह्मा चेलानी तथा क्लॉड अर्पी ने चीन की भू-राजनीतिक नीतियों, तिब्बत पर नियंत्रण तथा भारत-चीन संबंधों का विश्लेषण किया है। इन अध्ययनों में यह स्पष्ट किया गया है कि चीन तिब्बत को सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र मानता है तथा उसकी नीतियाँ सांस्कृतिक नियंत्रण एवं राजनीतिक प्रभुत्व पर आधारित हैं।

हालाँकि उपलब्ध साहित्य में दीनदयाल उपाध्याय एवं दलाई लामा के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम देखने को मिलता है। विशेषतः तिब्बत के स्वतंत्रता संघर्ष एवं चीन की प्रवृत्ति के संदर्भ में दोनों विचारकों की वैचारिक समानताओं एवं भिन्नताओं का समन्वित अध्ययन अभी तक पर्याप्त रूप से नहीं हुआ है। प्रस्तुत शोध इसी रिक्ति को भरने का प्रयास करता है । यह अध्ययन सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं आध्यात्मिक मानवतावाद के समन्वय के माध्यम से तिब्बत प्रश्न की नवीन व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास करता।

शोध उद्देश्य

1.पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं दलाई लामा के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.तिब्बत के स्वतंत्रता संघर्ष के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक आयामों का विश्लेषण करना।

3.चीन की साम्यवादी एवं विस्तारवादी प्रवृत्तियों का तिब्बत के संदर्भ में अध्ययन करना।

4.एकात्म मानव दर्शन एवं आध्यात्मिक मानवतावाद की वैचारिक प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

5.भारत-तिब्बत संबंधों के सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत महत्व का मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न

1.दीनदयाल उपाध्याय एवं दलाई लामा के विचारों में कौन-कौन सी वैचारिक समानताएँ एवं भिन्नताएँ विद्यमान हैं?

2.तिब्बत का स्वतंत्रता संघर्ष सांस्कृतिक एवं मानवाधिकार आधारित संघर्ष के रूप में किस प्रकार विकसित हुआ?

3.चीन की विस्तारवादी नीतियों का तिब्बती समाज एवं संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ा?

4.एकात्म मानव दर्शन एवं दलाई लामा के आध्यात्मिक मानवतावाद की वर्तमान वैश्विक संदर्भ में क्या प्रासंगिकता है?

5.भारत-तिब्बत संबंध एशियाई भू-राजनीति एवं सांस्कृतिक संतुलन में किस प्रकार महत्वपूर्ण हैं?

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) प्रकृति का है । इसमें ऐतिहासिक, तुलनात्मक तथा व्याख्यात्मक शोध पद्धतियों का समन्वित उपयोग किया गया है । अध्ययन का मुख्य आधार द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources) होंगे, जिनमें पुस्तकें, शोध-पत्र, सरकारी दस्तावेज, ऐतिहासिक अभिलेख, समाचार-पत्र, व्याख्यान एवं आधिकारिक रिपोर्टें सम्मिलित हैं ।

शोध में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद संबंधी व्याख्यानों, लेखों एवं साहित्य का अध्ययन किया गया है । साथ ही दलाई लामा के भाषणों, आत्मकथात्मक साहित्य एवं बौद्ध दर्शन संबंधी कृतियों का विश्लेषण किया गया है । तिब्बत-चीन संबंधों को समझने हेतु ऐतिहासिक दस्तावेजों, अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों तथा मानवाधिकार संगठनों के प्रकाशनों का उपयोग किया गया है।इस शोध में तुलनात्मक अध्ययन पद्धति (Comparative Method) के माध्यम से दोनों विचारकों के चिंतन का विश्लेषण किया गया है । विशेष रूप से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, मानवता, अहिंसा, आध्यात्मिकता एवं स्वतंत्रता संबंधी विचारों की तुलना की गया है । इसके अतिरिक्त चीन की नीतियों का अध्ययन राजनीतिक एवं भू-राजनीतिक दृष्टिकोण से किया गया है ।

अध्ययन में ऐतिहासिक पद्धति (Historical Method) का उपयोग करते हुए तिब्बत के स्वतंत्रता संघर्ष की पृष्ठभूमि, चीन के हस्तक्षेप तथा भारत-तिब्बत संबंधों के विकास का क्रमबद्ध विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । साथ ही व्याख्यात्मक पद्धति (Interpretative Method) द्वारा यह समझने का प्रयास किया गया है कि दीनदयाल उपाध्याय एवं दलाई लामा के विचार वर्तमान वैश्विक संदर्भ में किस प्रकार प्रासंगिक हैं।

इस शोध का उद्देश्य केवल ऐतिहासिक तथ्यों का संकलन नहीं, बल्कि वैचारिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से तिब्बत प्रश्न की व्यापक समझ विकसित करना है। अतः यह अध्ययन अंतरविषयी (Interdisciplinary) दृष्टिकोण अपनाते हुए इतिहास, राजनीति विज्ञान, अंतरराष्ट्रीय संबंध, बौद्ध अध्ययन एवं भारतीय चिंतन की अवधारणाओं का समन्वित उपयोग है।

शोध अध्ययन

तिब्बत प्राचीन काल से ही एक विशिष्ट सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्र रहा है। सातवीं शताब्दी में सोंगत्सेन गम्पो के शासनकाल में तिब्बती राज्य का विस्तार हुआ तथा भारत एवं नेपाल के साथ सांस्कृतिक संबंध स्थापित हुए। भारतीय बौद्ध धर्म विशेषतः महायान एवं वज्रयान परंपरा ने तिब्बती समाज को गहराई से प्रभावित किया।

मध्यकालीन काल में तिब्बत ने एक स्वतंत्र सांस्कृतिक पहचान बनाए रखी। यद्यपि चीन एवं तिब्बत के बीच विभिन्न कालों में राजनीतिक संबंध रहे, किंतु तिब्बत की आंतरिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्वायत्तता बनी रही। आधुनिक काल में चीन ने तिब्बत को अपने नियंत्रण में लेने का प्रयास किया, जिसका चरम 1950 में दिखाई देता है।

चीन के नियंत्रण के बाद तिब्बती मठों, धार्मिक संस्थानों एवं सांस्कृतिक प्रतीकों पर व्यापक प्रभाव पड़ा। अनेक बौद्ध मठ नष्ट किए गए तथा धार्मिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाए गए। यह स्थिति तिब्बती समाज में असंतोष एवं प्रतिरोध का कारण बनी।

दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन एवं तिब्बत प्रश्न

दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन भारतीय संस्कृति, धर्म एवं नैतिकता पर आधारित था। उनका “एकात्म मानव दर्शन ” व्यक्ति एवं समाज के समन्वित विकास की अवधारणा प्रस्तुत करता है। उनके अनुसार किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी सांस्कृतिक चेतना में निहित होती है।

उन्होंने पश्चिमी साम्यवाद की आलोचना करते हुए कहा कि साम्यवाद मनुष्य को केवल आर्थिक इकाई मानता है तथा

उसकी आध्यात्मिक आवश्यकताओं की उपेक्षा करता है। चीन द्वारा तिब्बत में अपनाई गई नीतियाँ इस आलोचना को प्रासंगिक बनाती हैं।

तिब्बत का प्रश्न सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं आत्मनिर्णय के अधिकार से जुड़ा हुआ है। दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार प्रत्येक समाज को अपनी सांस्कृतिक पहचान एवं परंपराओं के अनुसार विकसित होने का अधिकार होना चाहिए। चीन की नीतियाँ तिब्बत की इसी सांस्कृतिक स्वतंत्रता को चुनौती देती हैं।

दलाई लामा का आध्यात्मिक मानवतावाद

दलाई लामा ने तिब्बती संघर्ष को वैश्विक नैतिकता एवं मानवता के प्रश्न के रूप में प्रस्तुत किया। उनका चिंतन बौद्ध दर्शन, करुणा एवं अहिंसा पर आधारित है।

दलाई लामा के अनुसार विश्व शांति केवल राजनीतिक समझौतों से स्थापित नहीं हो सकती, बल्कि इसके लिए मनुष्य के भीतर नैतिक चेतना एवं करुणा का विकास आवश्यक है। उन्होंने तिब्बत की स्वतंत्रता के लिए हिंसात्मक संघर्ष का विरोध किया तथा संवाद एवं सह-अस्तित्व को महत्व दिया।उनकी "मध्यम मार्ग" नीति चीन के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व एवं सांस्कृतिक स्वायत्तता की वकालत करती है। यह दृष्टिकोण आधुनिक विश्व राजनीति में नैतिक कूटनीति का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

चीन की विस्तारवादी प्रवृत्ति : एक विश्लेषण

चीन की नीतियाँ केवल तिब्बत तक सीमित नहीं हैं। उसका सामरिक एवं आर्थिक विस्तारवाद वैश्विक राजनीति में महत्वपूर्ण चुनौती बन चुका है। तिब्बत चीन के लिए सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है, क्योंकि यह हिमालयी सीमा एवं जल संसाधनों पर नियंत्रण प्रदान करता है।

चीन की साम्यवादी व्यवस्था सांस्कृतिक विविधता की अपेक्षा राजनीतिक केंद्रीकरण को अधिक महत्व देती है। तिब्बत में धार्मिक संस्थानों पर नियंत्रण, जनसंख्या परिवर्तन की नीतियाँ तथा सांस्कृतिक समायोजन इसी रणनीति का भाग हैं।

भारत के संदर्भ में भी तिब्बत एक "बफर ज़ोन" के रूप में महत्वपूर्ण रहा है। तिब्बत पर चीन के नियंत्रण ने भारत-चीन संबंधों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया। 1962 का भारत-चीन युद्ध तथा वर्तमान सीमा विवाद इसी भू-राजनीतिक परिवर्तन के परिणाम हैं।

तुलनात्मक विवेचना : दीनदयाल उपाध्याय एवं दलाई लामा

दोनों विचारकों के चिंतन में अनेक समानताएँ विद्यमान हैं। दोनों मानवता, नैतिकता एवं सांस्कृतिक संरक्षण को महत्व देते हैं। दीनदयाल उपाध्याय का "एकात्म मानवव

दर्शन " तथा दलाई लामा का "आध्यात्मिक मानवतावाद" व्यक्ति की समग्र उन्नति पर बल देता है।

दोनों विचारक भौतिकतावादी व्यवस्थाओं की आलोचना करते हैं तथा आध्यात्मिक मूल्यों को मानव सभ्यता का आधार मानते हैं। दोनों के चिंतन में अहिंसा, सह-अस्तित्व एवं सांस्कृतिक स्वतंत्रता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

हालाँकि दोनों के दृष्टिकोणों में कुछ भिन्नताएँ भी हैं। दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर आधारित है, जबकि दलाई लामा का दृष्टिकोण वैश्विक नैतिकता एवं बौद्ध मानवतावाद पर आधारित है। फिर भी दोनों विचार आधुनिक विश्व को वैकल्पिक मानवीय दृष्टि प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

तिब्बत का स्वतंत्रता संघर्ष आधुनिक विश्व में सांस्कृतिक अस्मिता, धार्मिक स्वतंत्रता एवं मानवाधिकारों के संघर्ष का महत्वपूर्ण उदाहरण है। चीन की विस्तारवादी एवं साम्यवादी नीतियों ने तिब्बती समाज की सांस्कृतिक पहचान एवं धार्मिक

स्वतंत्रता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है।

दीनदयाल उपाध्याय एवं दलाई लामा दोनों के विचार इस संकट के समाधान हेतु महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करते हैं। एकात्म मानववाद मानव-केंद्रित एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित विकास की अवधारणा प्रस्तुत करता है, जबकि दलाई लामा का आध्यात्मिक मानवतावाद करुणा, अहिंसा एवं विश्व शांति पर बल देता है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि तिब्बत का प्रश्न केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एवं मानवीय प्रश्न है। चीन की नीतियों का स्थायी समाधान केवल सैन्य अथवा राजनीतिक माध्यमों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए संवाद, सांस्कृतिक सम्मान एवं मानवाधिकार आधारित दृष्टिकोण आवश्यक है।

समाधान

1.तिब्बत प्रश्न के समाधान हेतु अंतरराष्ट्रीय समुदाय को मानवाधिकार एवं सांस्कृतिक संरक्षण के आधार पर सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

2.भारत को तिब्बत के सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व को ध्यान में रखते हुए संतुलित एवं दीर्घकालिक नीति अपनानी चाहिए।

3.चीन को तिब्बती जनता की सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्वतंत्रता का सम्मान करना चाहिए तथा दमनकारी नीतियों में परिवर्तन करना चाहिए।

4.विश्व स्तर पर अहिंसा, करुणा एवं सांस्कृतिक सह-अस्तित्व पर आधारित वैचारिक विमर्श को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

5.विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में तिब्बत अध्ययन, भारत-तिब्बत संबंध तथा दीनदयाल उपाध्याय एवं दलाई लामा के चिंतन पर अधिक शोध को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1.Arpi, C. (2004). Born in Sin: The Panchsheel Agreement. New Delhi: Mittal Publications.

2.Chellaney, B. (2017). Water, Peace, and War: Confronting the Global Water Crisis. New Delhi: HarperCollins.

3.Dalai Lama. (1990). Freedom in Exile. New York: HarperCollins.

4.Goldstein, M. C. (1997). The Snow Lion and the Dragon. Berkeley: University of California Press.

5.Goldstein, M. C. (2007). The Struggle for Modern Tibet. New York: M.E. Sharpe.

6.Harrer, H. (1953). Seven Years in Tibet. London: Rupert Hart-Davis.

7.Laird, T. (2006). The Story of Tibet. New York: Grove Press.

8.Thurman, R. (2008). Why the Dalai Lama Matters. New York: Atria Books.

9.Upadhyaya, D. (1965). Integral Humanism. New Delhi: Bharatiya Jana Sangh.

10.Garver, J. W. (2001). Protracted Contest: Sino-Indian Rivalry in the Twentieth Century. Seattle: University of Washington Press.

11.Sharma, M. C. (2007). Pandit Deendayal Upadhyaya: Kartitva Evam Vichar. New Delhi: Prabhat Prakashan.

12.ठेंगड़ी, दत्तोपंत. (2008). एकात्म मानवदर्शन : एक अध्ययन। नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन।

13.उपाध्याय, दीनदयाल. (2009). एकात्म मानववाद। नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन।

14.उपाध्याय, दीनदयाल. (2014). राष्ट्र जीवन की दिशा। नई दिल्ली : लोकहित प्रकाशन।

15.शर्मा, महेश चन्द्र. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय। नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन।

16.रिनपोछे, समदोंग. (2011). तिब्बत : संस्कृति और संघर्ष। धर्मशाला : तिब्बत अध्ययन संस्थान।

17.चतुर्वेदी, शैलेन्द्र. (2018). भारत-चीन संबंध और तिब्बत प्रश्न। नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।

18.सिंह, आर. के. (2020). तिब्बत का स्वतंत्रता आंदोलन और वैश्विक राजनीति। वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन।

19.Kumar, A. (2019). “Tibet, China and India: Strategic Dimensions.” Journal of Asian Studies, 14(2), 45-61.

20.Mishra, S. (2021). “Integral Humanism and Cultural Nationalism in Contemporary India.” Indian Journal of Political Science, 82(3), 112-126.